ओ३म्

प्रकाशन की तिथि 01.1.2018

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

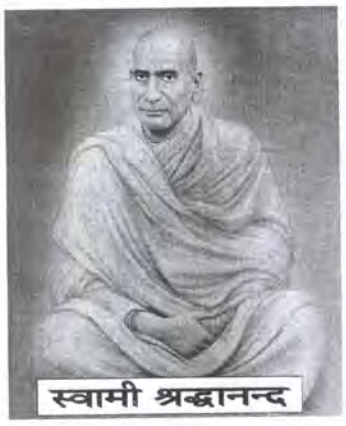
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

पं. मदनमोहन मालवीय

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 41 अंक 1

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 500 रुपये

जनवरी 2018 विक्रम सम्वत् 2074 पौष-माघ

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

हे प्रभो ! मुझे सुपथ पर ले चलो

- मंत्र महिमा

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेअस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मद्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते
नमउक्तिं विधेम ।। (ऋ. 1/189/1)

मंत्र में प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हे ज्योतिर्मय परमेश्वर। मुझे सुपथ पर लेकर चलो। मैं सन्मार्ग पर चलते -चलते ही धन और ऐश्वर्यों का स्वामी बनूं और मुझे उन्हीं मार्गों पर चलाना "विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्" ज्ञानी, सिद्ध और आदर्श पुरुष जिस मार्ग पर चलते गए वह मार्ग हमें भी देना। भक्त पुनः भगवान से प्रार्थना करता है- "युयोध्यस्मद्जुहुराणमेनो" जो भी हमारे अन्दर कुटिलता, कुविचार एवं पाप कर्म हैं उन्हें दूर करने की शक्ति देना। "भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम" अनेक प्रकार से आपकी स्तुति के गीत की क्षमता मेरे जीवन में बनी रहे।

हर स्थिति परिस्थिति में मैं तुम्हारी स्तुति कर सकूं। धन का लालच, संसार की परिस्थितियां मेरी भक्ति में बाधा न बनें। शरीर का रोग, घर की कलह तेरी भक्ति में बाधक न बन जाएं। अर्थात् अपनी भक्ति के लिए मुझे अवसर देते रहना और मैं तेरी स्तुति के गीत गाता रहूं।

परमात्मा जिन्हें अपना नाम जपने का अधिकार देता है और जिस पर अपनी असीम-असीम अनुकम्पा करता है वही, उसके मार्ग के लिए चुने जाते हैं, परमेश्वर उसी को चुनता है जो भगवान से भगवान को ही मांगता है। उसका प्रेम, उसकी दया और उसी की भक्ति चाहता है।

लेकिन हम भगवान से और तरह के धन मांगते हैं, जमीन-जायदाद, घर का प्रेम, जीवन का सुख, रिश्तेदारों से मेल-मिलाप, जो भी हमारे अपने हैं उनकी वफादारी और तरह-तरह के सुख हम अपने जीवन में मांगते हैं।

जीवन के अनेक तरह के सुख हैं। एक सुख यह भी है कि धन इतना रहे कि हाथ खाली न हो, सुत आज्ञाकारी हो। एक सुख जीवन का यह भी है कि पति-पत्नी में मेल-मिलाप हो, मदभेद न उभरे। विचार भेद अगर बनते भी हों तो मन भेद न हों। पत्नी अपने पति के आदर्श को अपना आदर्श माने, उसके लक्ष्य में अपने आपको जोड़ ले तो यह भी जीवन का बहुत बड़ा सुख है।

सुख यह भी है जीवन का, जहां हम रहते हैं वहां का माहौल अच्छा हो, आस-पड़ोस अच्छा हो। एक सुख यह भी है कि प्रशासनिक सुख भी मिले। जीवन का एक सुख यह भी माना जाता है कि कोई न कोई हुनर कोई न कोई कला, कोई न कोई अर्थकरी विद्या हमें प्राप्त हो। पढ़ाई लिखाई के हिसाब से सांसारिक पढ़ाई लिखाई भी व्यक्ति की पूरी होनी चाहिए। क्योंकि और सब सारे सुख, धन-वैभव जीवन में आते हैं और हाथ से निकल जाते हैं। पर व्यक्ति में कोई न कोई ऐसी कला हो-जिससे वह अपने आप को आगे बढ़ा सके। जिससे व्यक्ति, पिछड़ने के बाद भी, अपने आर्ट्स से स्वयं को खड़ा कर लेता है फिर से स्थिरता आ जाती है।

लेकिन एक बात सदा याद रखें कि जीवन का जो भी सुख हम मांगते हैं, उनमें भगवान से यह भी मांगना चाहिए कि तेरी भक्ति में लगन लग जाए। ज्ञान-श्रवण में रूचि हो, सेवा करने के लिए सामर्थ्य बना रहे। दान देने के लिए हाथ खाली न हों। हृदय इतना सूखा न हो कि किसी के आंसू देखकर यह पिघल न सके। मन ऐसी स्थिति में कभी न पहुंचे कि विनम्रता चली जाए, प्रसन्नता खो जाए। इसलिए भगवान से यह प्रार्थना जरूर करना कि अगर कुछ संसाधन प्रभु आप देते हैं तो उन संसाधनों के साथ भक्ति की लगन जरूर देना, निष्ठा देना जिससे भक्ति में नियम से बैठ सकूं। इससे भी बड़ी बात तो यह हो कि तेरे नाम का और तेरी भक्ति का मूल्य समझूं और उसका मूल्य इतना बड़ा हो कि दुनिया की कोई भी चीज तेरे सामने कीमती न रह जाए।

हे मेरे प्रभु ! जिस समय तेरी आराधना करने का मेरा समय हो जाए तो मैं सारी दुनिया को ठुकरा दूं लेकिन तेरे समय को न छोड़ूं, तेरी भक्ति के आसन पर आकर बैठूं ये चीज भगवान से जरूर मांगे। पर हम समायोजन करने लग जाते हैं कि कोई बात नहीं भगवान का समय है, इसे तो हम इधर-उधर कर सकते हैं, ग्राहक हाथ से न निकल जाए, मित्र व मिलने वाले रिश्तेदार गायब न हो जाएं, दुनिया की और बहुत सारी चीजें हैं। क्योंकि हम दुनिया को मूल्य देने लग गए दुनिया के मालिक को मूल्य नहीं देते, उसकी कीमत नहीं समझते।

नोट गिनते-गिनते नहीं भूल सकते पर माला जपते समय बीच में ध्यान हट जाता है। क्योंकि नोट का तो मूल्य समझ में आता है, पर माला का क्या है? दो-चार फालतू भी जप लेंगे, बाद में और घुमा लेंगे और बीच में से छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं। नोटों की गड्डी गिनते समय बीच में कोई व्यवधान पैदा करे तो व्यक्ति वहीं पर रुक-रुककर संख्या मन में बोलता रहता है। जैसे चालीस पर पहुंचा था, तो बार-बार चालीस-चालीस कहता रहेगा। जिसने व्यवधान डाला है उससे भी बात करता रहेगा कि बताओ। क्या बात है? अगर गिनती भूल जाए तो पुनः शुरुआत करेगा। क्योंकि माल की बात है, पैसों की गिनती है।

बड़े नोटों की तो बात ही क्या, व्यक्ति रेजगारी को भी दोबारा गिनने में लग जाता है कि ठीक से गिनें। उस समय तो न जाने क्या-क्या दांव पर लगाने को तैयार हो जाता है। जैसे नोट गिन रहा हो और पत्नी गरम-गरम भोजन सामने रखकर बैठी हो और कह रही हो कि बाद में गिन लेना पहले खाना खा लीजिए, तो खाना तो बाद में हो जाएगा, एक बार तसल्ली से गिन लेने दो, मन को तसल्ली हो जाएगी।

कई बार तो वह पैसों की गिनती में रात की नींद भी खो देता है। पैसे गिनते-गिनते बारह-एक बज जाएंगे पत्नी कहती है इतना टाइम हो गया अब तो सो जाओ तो वह कहेगा की नींद में वह मजा नहीं है जो नोटों का हिसाब लगाने में मजा है। मजे की बात यह है कि जो अपने हैं उनको गिनने में आनन्द है। अगर कोई बैंक का कर्मचारी नोट गिन रहा है और भोजन का समय हो गया हो, उसी समय, मान लीजिए एक बजे मध्याह्न समय होता है और पौने एक बजे बहुत सारे छोटे-छोटे नोट लेकर कोई ग्राहक पैसे जमा कराने आ जाए, जिसे गिनने में ज्यादा समय लगेगा और कर्मचारी की मजबूरी यह है कि न तो समय से पहले कार्यालय छोड़ सकता है और न ही ग्राहक को मना कर सकता है तो ऐसे में उस कर्मचारी को ग्राहक पर बहुत गुस्सा आता है। क्योंकि वे पैसे दूसरे के हैं और अगर अपने होते तो घर में गिनता तो रात की नींद भी भूल जाता और खाना भी भूल जाएगा।

इसी तरह अगर व्यक्ति भगवान के नाम को ही मूल्य देने वाला बन जाए तो सारी दुनिया को ठोकर मार सकता है लेकिन भगवान के मार्ग पर बैठकर उसकी भक्ति का कभी ठुकरा नहीं सकता है, उससे कहेगा कि तुझसे बढ़कर दुनिया में कोई कीमती नहीं है। भगवान की भक्ति और उसका मार्ग ही सुपथ है इसलिए हर किसी की कोशिश इस मार्ग पर चलने की होनी चाहिए ।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

'मकर संक्रान्ति का स्वरुप और इसका ऐतिहासिक महत्व'

– –मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मकर संक्रान्ति पर्व सूर्य के मकर राशि में संक्रान्त वा प्रवेश करने का दिवस है। इस दिन को उत्साह में भरकर मनाने के लिए इसे मकर संक्रान्ति, लोहड़ी व पोंगल आदि नाम दिए गये हैं। मकर संक्रान्ति क्या है? इसका उत्तर है कि पृथिवी एक सौर वर्ष में सूर्य की परिक्रमा पूरी करती है। पृथिवी वर्तुलाकार परिधि पर सूर्य का परिभ्रमण करती है। इस परिधि व पथ को **''क्रान्तिवृत''** कहते हैं। ज्योतिषियों ने क्रान्तिवृत्त के 12 भाग कल्पित किए हुए हैं। उन 12 भागों के नाम उन–उन स्थानों पर आकाश में नक्षत्र–पुंजों से मिलकर बनी हुई मिलती–जुलती कुछ सदृष आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रखे गए हैं जैसे–1 मेष, 2 वृष, 3 मिथुन, 4 कर्क, 5 सिंह, 6 कन्या, 7 तुला, 8 वृश्चिक, 9 धनु, 10 मकर, 11 कुम्भ तथा 12 मीन। क्रान्तिवृत के यह बारह भाग और 12 आकृतियां राशि कहलाती हैं। **जब पृथिवी क्रान्तिवृत्त पर भ्रमण करते हुए एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उसको ''संक्रान्ति'' कहते हैं।** लोक व्यवहार में पृथिवी के संक्रमण को पृथिवी का संक्रमण न कह कर सूर्य का संक्रमण कहते हैं। 6 माह तक सूर्य क्रान्तिवृत्त के उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर उदय होता है। इन दोनों 6 माह की अवधियों का नाम **'अयन'** है। सूर्य के उत्तर की ओर इसके उदय की अवधि को **'उत्तरायण'** और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को **'दक्षिणायन'** कहते हैं।

उत्तरायण में दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर निकलता हुआ दिखाई देता है और उसमें रात्रि की अवधि बढ़ती जाती है तथा दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन आरम्भ होता है। **उत्तरायण में सूर्य के प्रकाश की अधिकता के कारण इसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी कारण देश व समाज में मकर संकान्ति के दिन को अधिक महत्व दिया जाता है।** कुछ लोग कहानियां गढ़ने में माहिर होते हैं। अतः इस दिन के माहात्म्य से संबंधित कुछ कथायें प्रचलन में हैं परन्तु उनका प्रमाण ढूढ़ने पर निराशा ही हाथ लगती है जिसका कारण उनका काल्पनिक होना ही है। अतः आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में कल्पित कथाओं को मानना उचित नहीं है। इससे मनुष्य जीवन को कोई लाभ तो होता नहीं अपितु समय व धन की हानि के साथ अन्धविश्वास हाथ लगते हैं जिससे जीवन उन्नति पथ से विमुख हो जाता है। मकर संक्रान्ति को मनाने का एक तर्क व युक्तिसंगत कारण हमारी संस्कृति का मुख्य ध्येय – **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** की

भावना है। इसी कारण उत्तरायण के प्रथम या आरम्भ के दिन को अधिक महत्व दिया जाता है और प्राचीन काल से इस दिवस को एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। मकर सक्रान्ति दिवस से पूर्व शीतकाल पूर्ण यौवन पर होता है जिससे लोगों को काफी कष्ट होता है। इस दिन व इसके बाद रात्रि काल घटने व दिवस की अवधि बढ़ने से सूर्य का प्रकाश अधिक देर तक मिलने लगता है जिससे मनुष्यों को सुख का अनुभव होता है। वृद्धावस्था में शीत के कारण कई प्रकार के रोगों से बचाव होने से शीतकाल में होने वाली वृद्धो की मृत्यु दर भी कुछ कम होती हुई दिखाई देती है। इस मनोवांछित परिवर्तन के कारण अपने उत्साह को प्रकट करने के लिए भी इस दिन को एक पर्व का रूप दिया गया है।

महाभारत में कथा आती है कि भीष्म पितामह अर्जुन के बाणों से बिंध जाने के बाद युद्ध करने में सर्वथा असमर्थ हो गये थे। उनके प्राणान्त का समय आ गया था। उन्होंने अपने समीपस्थ लोगों से तिथि, महीना व अयन के बारे में पूछा? उन्हें बताया गया कि उस समय दक्षिणायन था। ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत काल के दिनों में दक्षिणायन में मृत व्यक्ति की वह उत्तम गति नहीं मानी जाती थी जो कि उत्तरायण में प्राण छोड़ने पर होती है। इस सिद्धान्त का वेदों व वैदिक साहित्य में उल्लेख न होने के कारण यह उचित प्रतीत नहीं होता। भीश्म पितामह बाल ब्रह्मचारी थे। उन्होंने ब्रह्मचर्य एवं साधना द्वारा मृत्यु

व प्राणों को वश में कर रखा था। दक्षिणायन के विद्यमान होने का तथ्य जान लेने के बाद उन्होंने कहा कि अभी प्राण त्यागने का उत्तम समय नहीं है, अतः वह उत्तरायण के प्रारम्भ होने पर प्राणों का त्याग करेंगे। इस घटना से यह अनुमान है कि आज के दिन ही भीष्म पितामह ने अपने प्राणों का त्याग किया होगा। इससे आज की तिथि उनकी पुण्य तिथि होनी सम्भव है। अपने महाप्रतापी पूर्वजों को उनके जन्म दिन पर याद करने की परम्परा देश में है। उनके जन्म की तिथि तो सुरक्षित न रह सकी, अतः आज उनकी पुण्य तिथि का दिन ही उनका स्मृति दिवस है। **सारा देश उनसे ब्रह्मचर्य की शिक्षा ले सकता है।** उनका दूसरा गुण था कि पिता को प्रसन्न रखना। पिता की प्रसन्नता के लिए ही युवक देवव्रत, भीष्म पितामह का भीष्म प्रतिज्ञा करने से पूर्व का नाम, ने आजीवन ब्रह्मचारी रहने और अपनी सौतेली माता व उनके होने वाले पुत्रों की रक्षा करने, उन्हें ही राजा नियुक्त कराने व देश की सुरक्षा का व्रत लिया था। उनका त्याग विश्व इतिहास में अपूर्व व अन्तिम होने के साथ प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। अतः आज के दिन उन्हें भी याद करना उचित है। वेदों की एक सूक्ति है – 'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युपाघ्नत।' अर्थात् **ब्रह्मचर्य रूपी व्रत से मनुष्य मृत्यु को परास्त कर सकता है।**

आधुनिक समय में **महर्षि दयानन्द ने भी आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत रखकर देश व धर्म की अपूर्व सेवा की। उन्होंने वेदों का पुनरूद्धार कर इतिहास में महान कार्य किया। महाभारत काल के बाद वेदों के सत्य अर्थ लुप्त हो चुके थे। वेदों के नाम पर अनेक मिथ्या विश्वास प्रचलित थे। अपने अपूर्व ज्ञान व भक्तियों से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के सत्य अर्थों को भी खोज निकाला था। आज वेद संसार में सर्वोत्कृष्ट धर्म ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित हैं।** अतः मकर संक्रान्ति पर्व को भीष्म पितामह के स्मृति दिवस एवं ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठा दिवस के रूप में भी मनाया जाना चाहिये जिसकी आज देश को सर्वाधिक आवश्यकता है। ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा से ही देश में प्रतिभा की वृद्धि होगी।

हमने मकर संक्रान्ति के स्वरूप व इससे संबंधित कुछ बातों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। आशा है कि पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121

अरब के प्राध्यापक ने कहा, आप भिन्न–2 भाषा बोलने वाले समूह हैं, एक राष्ट्र नहीं

बेरुत की एक घटना है। एक होटल में चार भारतीय अंग्रेजी में बात कर रहे थे जिसे पास बैठे प्राध्यापक सुन रहे थे। उन्होंने एक भारतीय व्यक्ति से पूछा– 'क्या आप सभी भारतीय हैं। फिर अंग्रेजी में क्यों बातें कर रहे है? क्या आपकी अपनी कोई भाषा नहीं है? भारतीयों ने कहा – 'हम भारतीय अवश्य हैं पर हमारी भाषा अलग–अलग है। यह सुनकर अरब प्राध्यापक ने कहा – 'जब आपकी कोई भाषा नहीं है तब आप विभिन्न भाषा बोलने वाले लोगों का केवल समूह है राष्ट्र नहीं है।

धरती को प्रदूषण के महाविनाश से बचाना इस युग का सबसे बड़ा पुण्य है!

– डा0 जगदीश गांधी

(1) प्रकृति से खिलवाड़ के भयंकर परिणाम होगे!

धरती का अस्तित्व रखने वाले सभी जीवों का प्रकृति से सीधा संबंध है। प्रकृति में हो रही उथल–पुथल का प्रभाव सब पर पड़ता है। मनुष्य की छेड़छाड़ की वजह से प्रकृति रौद्ररूप धारण कर लेती है। मानव को समझ लेना चाहिए कि वह प्रकृति से जितना खिलवाड़ करेगा, उतना ही उसे नुकसान होगा। मानव ने पर्यावरण को प्रदूषित किया है, वनों को काटा है, जल संसाधनों का दुरूपयोग किया है। सुनामी हो या अमेरिका के कुछ शहरों को तबाह करने वाला तूफान, सब का कारण प्रकृति से छेड़छाड़ ही है। ओजोन परत में छेद व वातावरण में बढ़ते कार्बन डाई ऑक्साइड की वजह से ग्लोबल वार्मिंग का खतरनाक संकेत है। मानव प्रकृति से छेड़छाड़ कर अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना बंद करे। **आज इंसान ने इस जमीं पर मौत का आशियॉ बनाया। यूं तो कदम चाँद पर, जा पहुँचे है लेकिन जमीं पर चलना न आया। धरती को प्रदूषण के महाविनाश से बचाना आज के युग का सबसे बड़ा पुण्य है।**

(2) दस्तक देता हिमयुग का खतरा!

एक ऐसे समय में जब पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग और धरती के बढ़ते तापमान को लेकर चिंतित है, एक बिल्कुल अलग किस्म का खतरा धीरे–धीरे हमारी तरफ बढ़ रहा है। वह है हिमयुग की वापसी का खतरा। अभी यह सुनने में भले ही अजीब लगे, लेकिन हाल के वर्षों यूरोप और एशिया के मौसम में आए असाधारण बदलावों के देखते हुए हिमयुग की वापसी की आशंका को बल मिला है। पृथ्वी के उद्भव के शुरूआती दस हजार वर्षों तक हिमयुग था। इस दौरान पूरी धरती पर बर्फ जमी हुई थी। हिमयुग उस कालखंड को कहते है जिसमें धरती की सतह और वायुमंडल के तापमान में लंबे समय तक गिरावट आती रहती है। पिछला हिमयुग सिर्फ 25.8 लाख साल पहले आया था। इस युग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया के कुछ भाग बर्फ की चादर से ढक गए थे।

(3) अभी नहीं तो कभी नहीं!

धरती पर नए हिमयुग का जो खतरा मंडरा रहा है इसके पीछे भी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन और धरती का बढ़ता तापमान ही मुख्य कारण है। वैज्ञानिकों का तो दावा है कि नया हिमयुग अब तक के सभी हिमयुग से ज्यादा भीषण होगा। लेकिन लगता है विश्व की सभी सरकारों ने इन चेतावनियों पर बिल्कुल भी ध्यान न देने की कसम खा ली है। अब हमें एक पल की भी देर किए प्रकृति से खिलवाड़ बंद करना चाहिए अन्यथा इस नासमझी के भयंकर परिणाम होंगे।

(4) वृक्ष हमारे बड़े योगदानकर्ता हैं :–

धरती के निरन्तर बढ़ते बुखार को कम करने के लिए एक पेड़ लगाना करोड़ों पुण्य कमाने के समान है। पेड़ लगाना स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त करता है। हमारे पूर्वज पेड़ों के ऊपर या उनके नीचे रहा करते थे। ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों को वृक्षों के नीचे ही ज्ञान प्राप्त हुआ था। वृक्ष मानव जीवन और राष्ट्र–विश्व की समृद्धि में मूक योगदानकर्ता है। एक आंकड़े के अनुसार एक व्यक्ति सांस के जरिये एक घंटे में दो लीटर आक्सीजन अपने शरीर में लेता है। हिसाब लगाए तो एक पेड़ एक साल में एक व्यक्ति को सात लाख 20 हजार रूपए की आक्सीजन देता है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि वृक्ष हमारे लिये कितने बड़े योगदानकर्ता हैं। कंक्रीट के बढ़ते जंगलों के बीच वृक्षों के लिये जगह मिलना बहुत मुश्किल हो चुका है। शहरवासी गमलों में पौधों को लगाकर प्रकृति से नजदीकी बनाए रख सकते हैं।

(5) प्रकृति की गोद में हमारा वास्तविक विकास होता है :–

मन की शांति हेतु चलें प्रकृति की ओर प्रकृति की हरी–भरी हरियाली से मन तनावमुक्त रहता है। प्रकृति हमें पोषण, संरक्षण एवं सुरक्षा प्रदान करती है। यह हमारी सभी कामनाओं को पूर्ण करती है। प्रकृति की गोद में ही हमारा वास्तविक विकास होता है। प्रकृति और जीवन का गहरा संबंध है। प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

(6) पर्याप्त आक्सीजन व प्राणवायु न मिलने से क्रियाशीलता घटती है :–

प्राकृतिक वातावरण हमें सुकून प्रदान करता है। इस वातावरण में घुली प्राणशक्ति हमें प्राणवान बनाती है। साँसों के माध्यम से यह हमारे रग–रग में रच–बस जाती है और मन एवं भाव प्रसन्नता एवं खुशियों से भर जाते हैं। इस वातावरण में शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक कार्य सहजता से संपन्न होते हैं, जबकि प्रकृति से दूर भीड़ भरे माहौल में हमारे तन, मन एवं मस्तिष्क को पर्याप्त प्राणवायु के न मिलने से इनकी क्रियाशीलता घटती जाती है। हमारा दिमाग कुदरत की एक खूबसूरत मशीन है। प्राकृतिक वातावरण इस मशीन को क्रियाशील एवं जीवंत रखता है, जबकि भीड़भाड़, शोरगुल इस मशीन को बुरी तरह से थका देते हैं और यही वजह है कि हम भीड़–भाड़ में अधिक थके एवं निस्तेज नजर आते हैं।

(7) हरियाली एक प्रकार की मानसिक औषधि है :–

प्राकृतिक वातावरण, जैसे वन, उपवन, झरना, पर्वत, नदी आदि के किनारे, खेतों की हरियाली में मस्तिष्क शांत होता है, प्रसन्न होता है तथा इसकी क्रियाशीलता एवं रचनात्मकता में वृद्धि होती है। हरियाली से कल्पनाशीलता भी बढ़ती है। वास्तव में हरियाली एक प्रकार की मानसिक औषधि है, जिससे तनाव से सहज ही मुक्ति मिल जाती है हमें अपने आस–पास एवं घर–आँगन में पेड़–पौधे रोपने चाहिए, जिससे हमारे घर का वातावरण ठीक रहे एवं सभी की मानसिकता ठीक रहे। प्रकृति के गर्भ में विपुल संपदा भरी पड़ी है, यदि मानवीय पुरूषार्थ उसका सदुपयोग सीख ले तो कोई कारण नहीं कि हर मनुष्य को, हर प्राणी को, सुख–शांति के साथ रह सकने योग्य विपुल साधन उपलब्ध न हो जाएँ।

(9) मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त अपार संसाधनों का उपयोग विवेकी ढंग से करना चाहिए :–

सृष्टि का गतिचक्र एक सुनियोजित विधि व्यवस्था के आधार पर चल रहा है। ब्रह्माण्ड में अवस्थित विभिन्न नीहारिकाएं ग्रह–नक्षत्रादि परस्पर सहकार– संतुलन के सहारे निरन्तर परिभ्रमण विचरण करते रहते हैं। अपना भू–लोक सौर मंडल के बृहत परिवार का एक सदस्य है। सारे परिजन एक सूत्र में आबद्ध हैं। वे अपनी–अपनी कक्षाओं में घूमते तथा सूर्य की परिक्रमा करते हैं। सूर्य स्वयं अपने परिवार के ग्रह उपग्रह के साथ महासूर्य की परिक्रमा करता है। इतने सब कुछ जटिल क्रम होते हुए भी सौर, ग्रह, नक्षत्र एक दूसरे के साथ न केवल बंधे हुए हैं वरन् परस्पर अति महत्वपूर्ण आदान–प्रदान भी करते हैं। पृथ्वी का सूर्य से सीधा सम्बन्ध होने के कारण सौर–परिवर्तन से यहाँ का भौगोलिक परिवेश और पर्यावरण अत्यन्त प्रभावित होता है। यह सृष्टि केवल मनुष्य के लिए ही नहीं है वरन् इस पर जीव–जन्तुओं व वनस्पति का भी पूरा अधिकार है। अतः मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त अपार संसाधनों का उपयोग विवेकी ढंग से करना चाहिए तथा उन शक्तियों का सम्मान करना चाहिए जिन्होंने अरबों वर्ष पूर्व यह ब्रह्माण्ड हमें दिया।

(9) प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय कानून से विश्व को न्यायपूर्ण ढंग से चलाया जा सकता है :–

मानवता को बिगड़ते विश्व पर्यावरण, हिमयुग की वापसी, परमाणु शस्त्रों की होड़ के कारण सम्भावित तृतीय विश्व युद्ध, आतंकवाद, अशिक्षा, भूख–गरीबी एवं महारोगों के महाविनाश से उत्पन्न भयानक परिस्थितियों से बचाना है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 के प्राविधानों को जन–जन में प्रसारित करके विश्व को महाविनाश से बचाया जा सकता है। विश्व को बमों के जोर से नहीं वरन् प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय कानून से न्यायपूर्ण ढंग से चलाया जा सकता है। प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय कानून बनाने के लिए हमें लोकतांत्रिक ढंग से विश्व के सभी देशों से सदस्यों को चुनकर विश्व संसद का गठन शीघ्र करना होगा। विश्व का प्रत्येक नागरिक यह संकल्प ले कि विश्व संसद, विश्व सरकार तथा विश्व न्यायालय की अति आवश्यकता को समझते हुए इसके गठन के लिए सार्थक कदम उठायेंगे।

जय जगत

दृढ़ संकल्प से ही आन्तरिक परिवर्तन सम्भव है

– गिरीश त्रिवेदी

कई बार व्यक्ति अपने बारे में सोचता है कि मुझमें ये कमी है, मुझ में ये दोष है या मुझे अमुक लक्ष्य प्राप्त करना है, या मुझे अपनी आदतें बदलनी है पर चाहते हुए भी मुझसे हो नहीं पा रहा है। वह प्रयत्न भी करता है लेकिन हाथ कुछ विशेष लगता नहीं है। वह कई बार प्रयास करता है पर जैसे थे वैसे रह जाते हैं।

तो कारण क्या है। ...

हम अपने अन्दर जो कुछ परिवर्तन करना चाहते हैं उसे सीधा बदलाव लाने की अपेक्षा उस पर पर्याप्त समय चिंतन, संकल्प करके फिर परिवर्तन की ओर आगे बढना ठीक रहता है। यह चिंतन का काल कुछ या कई दिनों का भी हो सकता है। आप पाएंगे परिर्वतन अपने आप घटित हो रहा है, जबरदस्ती करना नहीं पड़ रहा है। और जितना आपका संकल्प दृढ होगा परिवर्तन भी उतना ही प्रभावशाली होगा, प्रगाढ होगा, सुविधाजनक होगा, आनन्द प्रद होगा।

वास्तव में हमारे पास दो मन हैं एक चेतन और दूसरा अवचेतन मन। और मुझे ऐसा प्रतीत होता है हम वही करते हैं जो हमारा अवचेतन मन चाहता है। चेतन मन को दबाना सरल है लेकिन अवचेतन मन के साथ जबरदस्ती करना मुश्किल है। इसलिये उसे पहले से समझाने की आवश्यकता होती है। वह यदि किसी बात को मान ले तो उसे अपनाता भी है। इस बात को कुछ उदाहरण से समझे...

यदि एक व्यक्ति सिगरेट पीता है या शराब पीता है और वह यह लत छोडना चाहता है। अब यदि उससे कोई कहे कि अब से नशा छोड दे अथवा अचानक स्वयं प्रतिज्ञा लेता है और उसका अवचेतन मन इस बात के लिये तैयार नहीं है तो ये प्रतिज्ञा टिकती नहीं है। यदि टिकती तो सभी लोग नशा छोड़ देते ।

होना ये चाहिये कि जिसे अपना नशा छोड़ना हो वह लगातार अपने आप को तरह–तरह से समझाता रहे। मैं ये क्या घटिया लोगों के जैसे नशा कर रहा हूँ, मुझे अपने पर लज्जा आती है। नशा करते हुए उसके दुर्गुणों का अवलोकन करता रहे। जब चिंतन परिपक्व हो जाएगा तब अन्तर मन से प्रेरणा उठेगी कि कल से नहा धोने के बाद मैं यह नशा नही करुंगा या निकट की किसी तिथी को बताएगी कि अमुक शुभ दिन से मुझे यह नशा पूरी तरह बंद करना है। और व्यक्ति को चाहिये उस शुभ घडी के आने तक अपने अवचेतन मन को समझाना जारी रखे। नशा छोडने के बाद पलभर के लिये भी नशे के बारे में नहीं सोचना होता। यदि वह व्यक्ति अपने अवचेतन मन को फिसलाने का प्रयत्न करेगा और फिर से विचार करेगा– 'चलो कुछ दिन और नशा कर लें फिर छोड़ देंगे। अभी तो मैंने देख लिया नशा आसानी से छूट रहा है तो बाद में ही छोड दूंगा, अभी कुछ दिन और मजा करलूं'। तो अवचेतन मन यह सीख कुछ देर आनाकानी करके शीघ्र ही मान लेगा और व्यक्ति नशा करता रहेगा क्योंकि चढना मुश्किल है, उतरना आसान है। अतः विपरीत संकल्प से पूरी तरह बचना होता है।

दूसरा उदाहरण देखते हैं। एक व्यक्ति आठ बजे उठता है और वह महात्माओं से सुनता है अथवा स्वाध्याय में पाता है – प्रातः सूर्योदय से ढाई घंटे पहले उठे और इस कारण वह आत्मग्लानि अनुभव करता है। वह चाहता है कि वह भी चार बजे उठे लेकिन सुबह की नींद बड़ी प्यारी लगती है, वह कभी जल्दी उठ भी जाता है तो भी अपने आप को फिरसे सोने से रोक नहीं पाता। कभी उठ भी जाए तो दूसरे–चौथे दिन से वही आठ बजे के समय पर आकर रह जाता है। कारण क्या है.... कारण वही है। अवचेतन मन प्रातः उठने को तैयार नही है।

हम देखते है किसी दिन प्रातः चार बजे की ट्रेन पकडनी है या ट्रेन से अपने स्टेशन पर उतरते समय चार बज रहे होंगे। तो उस समय हम कैसे बिना किसी आलस्य के जागृत हो जाते है। तब हमारा अन्तरमन दृढता से समझ चुका होता है कि नहीं उठे तो आगे मुसीबतें ही मुसीबतें होगी। वह इतनी गहराई से समझ चुका होता है कि अलार्म बजने से पहले ही उठ खडा होता है। यह मात्र ठान लेने की बात है। कच्चा–पक्का इरादा असफलता देता है।

एक और उदाहरण लेते हैं – हम सभी जानते हैं, ईशावास्यमिदं सर्वम्, हमें तो मात्र प्रयोगधिकार दिया गया है। और यदि हम मेहनत करके कुछ सम्पत्ति अर्जित भी करते हैं तो भी वह हमारी कभी नहीं होती अन्ततः सब कुछ छोड़कर जाना होता है। हमारे साथ मात्र कर्मफल ही आने वाला है। यह सब जानकर भी जीवन भर तेरा–मेरा–मेरा तेरा के चक्कर में फंसे रहते हैं, उसको ही सत्य मानते हैं। अधिक से अधिक अर्जित करने में जीवन खपा देते हैं। हम इसे माया कहते है पर माया मानते नहीं। आखिर ऐसा क्यों...

हमने श्रवण–स्वाध्याय को पचाया नहीं, उसे अवचेतन मन तक उतरने नहीं दिया। हम इस विषय पर चर्चा में निपूर्ण हों सकते हैं लेकिन करते विरूद्ध हैं। प्रतिफल अमूल्य मानव जीवन को यों ही व्यर्थ गंवा कर कर्माशय की गठरी भारी करके, सर पर लादे ठगे–ठगेसे चले जाते हैं। हम जीवन का अपमान करके मूर्ख बनकर जाते हैं। बहुत कुछ मिल सकता था इस जीवन में लेकिन हमने दूरदृष्टि नही रखी ।

हम अपने जीवन को झकझोर कर देखें। क्या–क्या पा सकते थे और क्या पाकर रहगए। अच्छा हो हम महात्माओं के प्रवचन को और स्वाध्याय को खानापूर्ति के लिये न पढे, न सुने। उसे उतरने दें अन्दर तक, तब तक उसका मनन करें कि वे जीवन में स्वतः ही उतरने को हमें विवश न कर दें। तब उन्हें उतरने दें जीवन में, जीवन बदलता रहेगा और हम देखेंगे अब ये अधिक मधुर, अधिक सरल, अधिक आनन्दप्रद और सुगन्धित हो गया है।

हम जीवन में देखते हैं, कई–कई लोग बहुत आगे तक निकल गए। क्या से क्या हो गए, निश्चित ही उन्होंने ये सूत्र अपनाया है। इसमें कोई शंका नहीं। तो हम भी अपने मानव जीवन लक्ष्य को अपने गन्तव्य प्राप्ति के लक्ष्य को अन्तरमन की गहराइयों में क्यों न ले जाए....।

जवां बनाए रखे आंवला

- आंवला चूर्ण और हल्दी चूर्ण समान मात्रा में लेकर भोजन के पश्चात् ग्रहण करने से मधुमेह में लाभ प्राप्त होता है।
- हिचकी तथा उल्टी में आंवला रस, मिश्री के साथ दिन में दो–तीन बार सेवन करें।
- पीलिया से परेशान हैं तो आंवले को शहद के साथ चटनी बनाकर सुबह–शाम सेवन करें।
- आंवला, रीठा व शिकाकाई के चूर्ण से बाल धोने पर बाल स्वस्थ व चमकदार होते हैं।
- आंवले का मुरब्बा शक्ति दायक व शीतलता प्रदान करने वाला होता है।
- स्मरण शक्ति कमजोर पड़ गई हो तो सुबह उठकर गाय के दूध के साथ दो आंवले का मुरब्बा खाना चाहिए।
- एक गिलास ताजा पानी 25 ग्राम सूखे आंवले बारीक पिसे हुए व 25 ग्राम गुड़ मिलाकर 40 दिन तक दिन में 2 बार सेवन करने से गठिया रोग समाप्त हो जाता है।
- सूखे आंवले का चूर्ण मूली के रस में मिलाकर 40 दिन तक खाने से पथरी रोग से मुक्ति मिल जाएगी।
- आंवले के रस में थोड़ा कपूर मिलाकर उसका लेप मसूड़ों पर करने से दांत का दर्द ठीक हो जाएगा। दांतों के कीड़े भी मर जाएंगे।
- रात को सोते समय आंवले का चूर्ण एक गिलास गाय के दूध के साथ सेवन करने से कब्ज दूर हो जाएगी।
- सूखे आंवले को पीसकर छलनी में छानकर आटे की भांति गूथकर रोज रात को सोते समय मुंह पर लेप करें और सुबह उठकर उसे धो दें। आपका चेहरा चमक उठेगा ।
- आंवले के रस में घी का छौंक देकर सेवन करने से ज्वर नष्ट हो जाता है।
- श्वेत प्रदर की समस्या में आंवले के चूर्ण में मुध मिलाकर सेवन करें, लाभ होगा।
- बूढ़े दिखते हैं सूखे आंवले का चूर्ण तथा तिल का चूर्ण सम भाग में मिलाकर घी व मधु के साथ 20 दिनों तक सेवन करें, लाभ होगा।

राष्ट्रहित में हंसते-हंसते मौत को गले लगाने वाली महान वीरांगना

मैना

सन् 1857 भारतीय-स्वतन्त्रता की पहली लड़ाई प्रारम्भ हो गई थी। अंग्रेजों के बढ़ते हुए अत्याचार तथा राज्यों को हड़पने की नीति ने शासन के प्रति अविश्वास पैदा कर दिया था। जनता के मन में विद्रोह की आग सुलगने लगी थी, क्रांति के कानपुर और दिल्ली दो प्रमुख केन्द्र थे।

उस समय कानपुर की क्रान्ति का नेतृत्व नाना साहब पेशवा कर रहे थे। उन्हें दूसरे स्थानों की व्यवस्था देखने के लिए जाना पड़ता था। अतः उन्होंने अपनी वीरांगना बेटी मैना के हाथों में क्रान्ति की सारी बागडोर सौंप दी और वे अन्य स्थानों पर चले गए। शेर को भला अपनी बेटी पर अविश्वास क्यों? उस समय वीर सेनानी तात्या टोपे और नानासाहब वहीं थे।

देखते ही देखते कानपुर पर विद्रोहियों का कब्जा हो गया। हजारों अंग्रेज मौत के घाट उतार दिए गए। सूचना इलाहाबाद तक पहुंची, अंग्रेजों की सेनाओं ने तुरन्त ही कानपुर की ओर मार्च कर दिया। कानपुर चारों ओर से घेर लिया गया। शेरनी मैना ने अपने सैनिकों को अलग-अलग कई टुकड़ियों में बांटकर अंग्रेजी सेना पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेजों को भागते ही बना, नगर के स्थान-स्थान पर लड़ाई शुरू हो ही चुकी थी, तब तक जनरल आउट्रक भी कई हजार सैनिक लेकर वहां आ पहुंचा ।

अब अंग्रेजों के पैर फिर से जमने लगे और उन्होंने विद्रोहियों को गाजर-मूली की तरह से काटना शुरू कर दिया। उनके घेरे में तात्या टोपे भी फंस चुके थे। 13 वर्षीय बालिका मैना ने जब यह स्थिति देखी तो एक क्षण के लिए वह हतप्रभ सी रह गई उसके मन में आया तात्या टोपे का जीवन सभी सैनिकों में सबसे महत्वपूर्ण है। इतनी सूझ-बूझ वाला तथा अंग्रेजों को चकमा देकर अपना काम बनाने वाला नेता फिर कहां से मिल सकेगा ? तात्या के जीवन के साथ स्वतन्त्रता का यह खेल ही समाप्त हो सकता है अतः क्या यही अच्छा हो उसके स्थान पर मैं अपने प्राण देकर उसे इस घेरे से बचा दूं। मेरे मरने के बाद मुझ जैसी सैकड़ों बालाएं युद्ध में कार्य करने वाली मिल जाएंगी, पर तात्या जैसा वीर न मिलेगा।

दूसरे ही क्षण मैना ने अपने को तात्या के पास खड़ा पाया। धीरे से तात्या के कान में कुछ कहा और शेरनी की भांति अंग्रेजों पर टूट पड़ी। एकदम अंग्रेज अपने को न संभाल सके और तात्या को उस घेरे से निकल भागने का अवसर मिल गया। मैना काफी देर तक अंग्रेजों को पीछे खदेड़ती रही । कई घण्टे युद्ध करते-करते मैन थक गई थी उसे कुछ क्षण विश्राम की आवश्यकता थी, कि अचानक दूसरे छोर से गोरों पर सूबेदार टीमक सिंह ने आक्रमण कर दिया। शत्रुओं में खलबली मच गई।

मैना अवसर पाकर वहां से नौ दो ग्यारह हो गई और गंगा के किनारे तात्या के पास आ खड़ी हुई। तात्या से उसकी बात-चीत चल ही रही थी कि घुड़सवार सैनिक उसके सामने आ खड़े हुए, उन्हें देख तात्या गंगा में कूदकर उस पार निकल गया। रह गई अकेली मैना, उसके चारों ओर घुड़सवार सैनिक खड़े थे। वह उन्हें देखकर गिड़गिड़ाई नहीं और न जीवन दान के लिए चिल्लाई, वरन् तलवार निकालकर सैनिकों के रक्त से प्यास बुझाई। वे सैनिक, घोड़ों पर से नीचे लुढ़क गए। मैना उनमें से एक घोड़ा लेकर भोगने ही वाली थी कि अन्य सिपाहियों ने आकर उसे घेर लिया ।

शत्रुओं के रक्त से तलवार की प्यास पूरी तरह न बुझ पाई थी अतः उसने सामना करने वाले गोरे सैनिकों पर जैसे ही हाथ उठाया कि दुर्भाग्य से तलवार उसके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर गई। शत्रुओं के लिए इससे अच्छा अवसर कौन-सा हो सकता था? उन्होंने उसे बन्दी बना लिया और सेनापति के सामने लाकर उपस्थित कर दिया ।

सेनापति ने अकड़ के साथ उससे पूछा 'तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है?'

'मेरा नाम मैना है और मैं नाना साहब पेशवा की बेटी हूं।'

अच्छा जो हम लोगों का एक नम्बर शत्रु है। तब तो तुम्हें अपने पिता का पता अवश्य मालूम होगा। पता बताने पर तुम्हें बहुत बड़ा इनाम मिलेगा और यदि तुमने पूछी गई बातों के सही-सही उत्तर न दिए तो तुम्हें जिन्दा ही जलवा दिया जाएगा। अब तुम्हारे सामने दो मार्ग हैं, जो चाहो उसे चुन सकती हो।

मौत से खेलने वाली मैना भला उन क्रान्तिकारियों की परम्परा को कैसे तोड़ती, जो हंसते-हंसते अपने प्राण दे सकते थे पर दल का भेद न बताते थे। उसका स्वाभिमान जाग उठा। गोरे सरदार ! तुम्हें शायद भारतीय वीरांगनाओं के इतिहास का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं। जलाने की धमकी सुनकर मुझे हंसी आती है क्योंकि यहां की वीरांगनाओं की आपत्ति के समय उसी ने तो लाज रखी है। भेद बताने से पहले तो खुशी-खुशी प्राण देना मैं अच्छा समझती हूं। जनरल को इस तेरह वर्षीय बालिका से यह आशा न थी । वह तो समझता था कि खाने और खेलने की इस उम्र में उसके प्रलोभन तथा भय का कुछ प्रभाव होगा पर वह अपनी असफलता को देख खीझ उठा, उसने चिल्लाकर कहा, सेनापति यह कोई शैतान लड़की मालूम पड़ती है, जो किसी प्रकार का भेद देना नहीं चाहती। अतः ले जाकर इसे आग में जिन्दा जला दो।

सजा सुनकर मैना का चेहरा दमक उठा। उसे प्रसन्नता हुई कि आज मुझे देश के लिए अपना जीवन समर्पण करने का अवसर मिल रहा है। उसने कहा सेनापति, मुझे कोई भी दण्ड दो, इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है। पर याद रखो तुम्हें हिन्दुस्तान शीघ्र ही खाली करना होगा, तुम इसे अब अधिक समय तक गुलाम बनाकर न रख सकोगे।

और दूसरे दिन पौ फटने से बहुत पहले ब्रह्ममुहूर्त में ही उस बालिका को खम्भे से बांधकर अग्नि को समर्पित कर दिया। जलते-जलते उसने नारे लगाए " हिन्दुस्तान जिन्दाबाद! भारत माता की जय!

मैना हमेशा के लिए चली गई पर उसका बलिदान क्रान्ति के इतिहास की धरोहर बन गया है। भला जिस देश में ऐसे बहादुर बालक, बालिकाएं जन्म लेते हों, उसे किसी देश से डरने की भी आवश्यकता है?

नमन् करो भारत माता को, जो जीवन देने वाली ।
नवल उमंगें नवल तरंगे, प्राणों में भरने वाली ।
प्रेम दया, ममता की मूरत ऊंचे आदर्शों वाली।
कवि, कोविद्, विज्ञान, विशारद सुत पैदा करने वाली ।
आन, बान मर्यादा की है वह रक्षा करने वाली ।
प्रेम, शौर्य, सद्भाव हृदय में, नित-नूतन भरने वाली ।
ऐसी दिव्य अलौकिक मां के चरणों में सब नमन करो ।

स्वागत 2018 (स्वागत दो हजार अट्ठारा)

एक बरस और बीत गया लो, कालचक्र की गति के चलते ।
पूर्ण हुए कुछ, रहे अपूर्ण कुछ, स्वप्न सलोने मन में पलते ।।
कुछ और अनचाहे अनुभव, नहीं कराना कभी दोबारा ।

तुम आये, जागी आशाएं, बदला है बस, सिर्फ कैलेन्डर ।
और नहीं है कुछ भी बदला, देश प्रगति की गति है मंथरा।
झूमें नारे-वादों पर सब, सही कौन, यह नहीं विचारा ।।

नारे बदलें, वास्तविकता में, रहे नहीं कोई लाचारी ।
भावनात्मक शोषण न होए, राजनीति हो जन हितकारी ।
सभी नीतियां-योजनाएं सब, हों लागू, था जिन्हें प्रचारा ।।

सुखी निरोगी सभी बने और, जन जन में फैले समृद्धि ।
उन्नति पथ पर रहे अग्रसर, होवें प्रगतिवादी बुद्धि ।
राष्ट्रभाव से वन्दन कर सब, वन्दे मातरम् बोलें नारा ।।

नयी-नयी आशाएं-योजना, जगी सभी के मन में भाई।
दो हजार अट्ठारा आया, होवे यह सबको सुखदाई ।
भाव यही हर हिय में पलते, विश्व गुरु बने भारत प्यारा।
स्वागत दो हजार अट्ठारा ।।

-डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' गुजरातियान,
धामपुर, (उ.प्र.)

श्री चतर सिंह नागर जी का सम्मान

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा एवं दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के महामंत्री को सम्मानित किया गया।

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) के तत्वावधान में आयोजित 91वें स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा 25 दिसम्बर 2017 के अवसर पर रामलीला मैदान में श्री चतर सिंह नागर जी को केन्द्रीय सभा ने, आर्य समाज के लिये दी गयी व्यापक सेवाओं के लिये प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं राशि से सम्मानित किया। श्री नागर जी को सम्मानित करते हुये आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली, महामंत्री श्री सतीश चड्डा, उपप्रधाना श्रीमती उषा किरण आर्या, श्री विद्यामित्र ठुकराल तथा कोषाध्यक्ष श्री अरुण प्रकाश वर्मा । इस अवसर पर नागर जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुये उन्हें महर्षि देव दयानन्द जी का मानस पुत्र, गुरुकुल कांगड़ी सहित नौ (9) गुरुकुलों का संस्थापक, निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी और शुद्धि कार्य हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाला भारत माता का महान सपूत बताया। शुद्धि सभा की ओर से हार्दिक बधाई ।

–संपादक

आगामी कार्यक्रम

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी का

अष्टम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव

दिनांक 27, 28, 29 जनवरी 2018, शनि, रवि, सोमवार

माघ शुक्ल दशमी, एकादशी, द्वादशी, वि.सं 2074

गुरुकुल हरिपुर ग्राम जुनानी, पो. गोड़फूला, जि. नुआपड़ा ओडिशा

दूरभाष – 9437188321, 9777453714, 9178371663, 8658834231

संयोजक : सुरेश चुघ

चलो दिल्ली ...! चलो दिल्ली....!

केन्दीय आर्य युवक परिषद् के 39वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

वायु प्रदूषण, पर्यावरण शुद्धि व राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ एवम् अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 26, 27, 28 जनवरी 2018 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, अशोक विहार फेज–1, दिल्ली–110052

(मेजर ध्यानचंद स्पोर्टस् स्टेडियम के सामने, निकट कन्हैया नगर मैट्रो स्टेशन)

इस विशाल कार्यक्रम में आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

डॉ. अनिल आर्य निवेदक : महेन्द्र भाई

मो. 9810117464, 9868664800 मो. 9013137070

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स (कमला नगर) दिल्ली–7 का 88वां वार्षिकोत्सव 22, 23, 24 दिसम्बर 2017 को बड़ी ही श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी के वैदिक ज्ञानवर्धक प्रवचन और पं. नरदेव आर्य जी के भजन हुए। आर्य समाज की ओर से दिल्ली पुरोहित सभा के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी को सम्मानित करके सभी सदस्य गौरवान्वित हुए।

–सुधीर चन्द्र घई

माह दिसम्बर 2017 के आर्थिक सहयोगी

श्रीमती शकुन्तला जी, शेख सराय, नई दिल्ली		5100/–
श्री शशि भूषण आर्य जी, देवरिया, उ.प्र.		1000/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के. पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बंगलौर	मासिक	750/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्री शिव कुमार मदान जी ट्रस्ट, सी–3, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	200/–
श्री महेन्द्र कुमार आर्य जी ग्राम–सूरजपुर, ग्रेटर नोयडा, उ.प्र.		200/–
श्री सन्तकुमार तोमर जी, आर्य समाज सी–3, जनकपुरी, दिल्ली		100/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/–
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/–

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	500/–
श्रीमती संतोष वहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
श्रीमती नीलम खुराना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
मास्टर अर्पण हंस, (नाती–श्रीमती नीलम खुराना जी), न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
बेबी स्वस्ति आर्या सुपुत्री डा. देवेश प्रकाश जी, आर्य महिला आश्रम	मासिक	100/–
श्रीमती कैथरिन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
श्रीमती आशा रानी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
श्रीमती कृष्णा दूबे, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
श्रीमती सावित्री आर्या, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	50/–
श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती नीरजा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	50/–

91वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

अधर्म को 'धार्मिक भ्रष्टाचार' की श्रेणी में रखते हुए एक कानून बनाए जाने सम्बन्धी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राष्ट्र, भाषा, धर्म, शिक्षा और संस्कृति की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व समर्पित कर श्रेष्ठ समाज का सृजन किया था, हम उनके पद चिन्हों पर चलते हुये तथा उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुये उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का हर सम्भव प्रयास करेगे – महाशय धर्मपाल, एम.डी.एच., प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

माननीय गंगा प्रसाद जी, राज्यपाल, मेघालय

हमारी हजारों साल पुरानी संस्कृति है। जब हमारे दिमागों में मन में वेद विद्या का प्रकाश होगा तो अन्धविश्वास का अन्धकार स्वत: खत्म हो जाएगा –डॉ. सत्यपाल सिंह जी, मानव संसाधन व विकास राज्य मन्त्री, भारत सरकार

राष्ट्र हितैषी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान देश के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है - श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी श्रद्धानन्द जी जानते थे शिक्षा के अभाव में व गरीबी में पाखण्ड बहुत जल्द अपने पैर पसारने लगता है और इसका लाभ अन्य मत-मतान्तर वाले उठाते हुये वहा उन्हें पथभ्रष्ट कर देते हैं –डॉ. कृष्ण गोपाल जी, सहसंचालक

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, के तत्वावधान में 91वीं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा एवं सार्वजनिक सभा का आयोजन 25 दिसम्बर 2017 को दिल्ली के रामलीला मैदान में किया गया। प्रात: 8 बजे आचार्य सहदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में बलिदान भवन में, श्री राजकुमार आर्य के संयोजन से तथा आर्य समाज नया बांस के सहयोग से यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के पदाधिकारियों ने बड़े ही उत्साह पूर्वक भाग लिया।

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-1-2018 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17

18-20

सेवा में,

शुद्धि समाचार

जनवरी – 2018

कैसे करे संसार का उपकार

- डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह (खुर्जा)

आर्य समाजों की स्थापना का उद्देश्य वेद का प्रचार एवं समाज से अन्ध विश्वास व पाखण्डों को दूर कर एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना था आज आर्य समाज संसार के उपकार हेतु ऋषि के बताए मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।

सत्य ज्ञान का प्रचार करना सभी का कार्य है आज समाज में अन्ध विश्वास व पाखण्ड बढ़ रहे है परन्तु उससे भी बड़ी समस्या बढ़ रहे भ्रष्टाचार व अपराधों की है लूटमार, डाका, राहजनी, महिलाओं के साथ छेड़ छाड़, बलात्कार, दहेज हत्या, महिलाओं का ससुराल में उत्पीड़न, बाल श्रम (बाल मजदूरी), फर्जी व छद्रम चर साधु, झूठ बोलना, गालीयों का भरपूर प्रयोग, प्रदूषण व उससे बढ़ते रोग, चिन्ता, भय का वातावरण, टूटते परिवार, वृद्धाश्रमों, अनाथालयों की बढ़ती संख्या आज चिन्ता का विषय है।

हालांकि सरकार भी अपना कार्य करती ही है परन्तु बिना समाज के सहयोग के कुछ होने वाला नहीं क्योकि कोर्ट कचहरी चिकित्सालय, पुलिस, प्रशासन, राजनीति आदि सब में व्यक्ति समाज से ही जाते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसीलिए समाज सुधार हेतु आर्य समाज की स्थापना की क्योंकि हमारा समाज श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ व्यक्ति उच्च पदों पर जा कर श्रेष्ठता का कार्य ही करेंगे वह न्यायोक्त, पक्षपात रहित, द्वेष से रहित, समाज के हित में हो वही कार्य करेंगे सत्य का ध्यान रखेंगे और सविधा शुल्क नहीं लेंगे, रिश्वत का विरोध ही करेंगे जो भ्रष्टाचार कार्यालयों में चला आ रहा है उसका विरोध करेंगे। घटतोली, कालाबाजारी इनको, नहीं होने देंगे समाज से ही ऐसे व्यक्ति पदों पर जाते हैं जो घूसखोरी, पक्षपात पूर्ण कार्य, अन्याय करते कराते हैं। ऐसे ही अनेक व्यक्ति भ्रष्टाचार व घोटालों में पाए गये व पकड़े भी गए जिन्होंने अपने पदों का दुरुपयोग किया ऐसे असामाजिक व्यक्तियों से जिन्हें न्याय मिलना चाहिए उन्हें अन्याय मिलता व जिन्हें दोष के कारण दण्ड मिलना चाहिए छोड़ दिया जाता है।

आज पूरा देश भ्रष्टाचार व अपराध की समस्या से ग्रस्त है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज को श्रेष्ठ निर्माण करने की बात इसीलिए कही थी कि जिससे सर्वत्र अर्थात् न्याय पालिका कार्यपालिका विधायिका आदि सभी में भ्रष्टाचार पक्षपात घूस खोरी बन्द होकर देश श्रेष्ठ व महान बने परन्तु यह समस्या गम्भीर है। अनेक श्रेष्ठ व्यक्ति हैं भी जिनके बल पर प्रजा को हानि से बचाया भी जा रहा है उन्हीं में से भगत सिंह, चन्द्रशेखर, लाल बहादुर पटेल जैसे महान पुरुष हुए उन्हीं के कारण देश को स्वतन्त्रता मिली परन्तु कुछ मूर्खताएँ भी हुई जिनसे भारत के टुकड़े हुए।

आज हमें समाज को श्रेष्ठ बनाने पर बल देना होगा महर्षि दयानन्द के मन्तव्य को समझना होगा जब तक हम समाज को श्रेष्ठ नहीं बनाऐंगे राजनीति व देश में बढ़ते अत्याचार पाप अपराध घूसखोरी लूट डाके बलात्कार बन्द नहीं होंगे कितने भी सुरक्षा व रक्षा बल बढ़ा लें कितने भी कानून बना लें कितना भी बल प्रयोग कर लें।

ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को समझ कर सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, गोकरुणानिधि, संस्कार विधि व अन्य साहित्य जो पं लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी ओमानन्द व आर्य विद्वानों के लिखे हैं उनका मनन नहीं करेंगे हम नहीं समझ पाऐंगे कि समाज को कैसे श्रेष्ठ निर्माण करें।

आज के समय में समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन आर्य समाज व आर्य विचारधारा द्वारा ही लाया जा सकता है इसे विश्व तो नहीं पहले भारतीय ही समझ लें आर्य साहित्य, वेद प्रचार द्वारा ही सामाजिक क्रान्ति लाई जा सकती है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

वेद ज्ञान ऐसा है कि इसमें कहीं कोई पक्षपात नहीं अन्याय की बात नहीं न्यायोक्त है समस्त मानव जाति के लिए ज्ञान है संसार के उपकार की भावना है मानव व मानवता का ज्ञान है अतः हमें संसार को श्रेष्ठ बनाना है तो वेद का समस्त समाज में प्रचार करना होगा घर घर वैदिक ज्योति को प्रज्वलित करना होगा।

जिस दिन समस्त समाज वेद ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित हो जाएगा उस दिन समाज से जो व्यक्ति शासन, प्रशासन, समाज के कर्णधार, उच्च पदस्थ व्यक्ति कर्मचारी भ्रष्टाचार, घूस खोरी, व बुराई, कुरीतियां, अन्ध विश्वासों को छोड़ सत्य व न्याय का मार्ग अपना लेंगे अभी समाज में अशिक्षा है अज्ञानता है अन्धविश्वास है बस आवश्यकता है इन बुराइयों से दूर करने की वह दूर हो सकती है वेद प्रचार से आर्य विद्वानों के लिए ज्ञान के प्रकाश से , जितना भी हो सके प्रकाश करें प्रचार करें एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण करें।

गुप्त रहस्य

– महात्मा आनन्द स्वामी जी

सुन्दर, मनोहारी बद्रिकाश्रम में सनत्कुमार आदि चारों ऋषि अभी आकर ठहरे ही थे कि उन्होंने नारदमुनि को चकित, दुःखी और चिन्ता में मग्न देखा।

नारदमुनि और चकित हो। सचमुच यह आश्चर्य की बात थी। सनत्कुमार आगे बढ़े। नारद को पुकारा–नारद! यह क्या अवस्था बनी हुई है ?किसलिए दुःखी हो रहे हो ?

नारदमुनि ने कहा– "क्या पूछते हो ?क्या दुनिया का रंग आपसे छिपा हुआ है ?क्या आप नहीं जानते कि संसार में न सत्य रहा है, न तप रहा है, न कहीं दान है। यदि है भी तो सर्वथा उलटा, जिससे लाभ के स्थान पर हानि हो रही है। सभी मुनष्य आलसी, मूर्ख और नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित हो रहे हैं। चहुँ ओर हाहाकार मचा हुआ है।"

मैंने देखा है और मेरी आँखों ने खून के आँसू बहाये हैं कि 'भक्ति' अपमानित और अनादृत हो रही है। भक्ति की ओर कोई ध्यान ही नहीं देता। यदि भक्ति कहीं दिखाई देती भी है तो वह केवल बाह्य टीप–टाप, झूठ और धोखा है। फिर और अन्याय देखिए कि भक्ति के प्रिय पुत्र ज्ञान और वैराग्य तो सर्वथा नष्ट हो गये हैं। ज्ञान और वैराग्य जो भक्ति के अत्यन्त आवश्यक अंग हैं, किसी के भी हृदय में दृष्टिगोचर नहीं होते। ज्ञान और वैराग्य के बिना शुष्क भक्ति व्यर्थ और निकम्मी है। तुलसीदास जी ने कैसी सुन्दरता से इस रहस्य को प्रकट किया है–

रैन का भूषण इन्दु है, दिवस का भूषण भानु।

दान का भूषण भक्ति है, भक्ति का भूषण ज्ञान।।

ज्ञान का भूषण ध्यान है, ध्यान का भूषण त्याग।

त्याग का भूषण शान्तिपद, तुलसी अमल अदाग।।

हे सच्चे ऋषियो! मेरा हृदय इस समय दुःख और चिन्ता से भरपूर है। संसार की ऐसी पीड़ित अवस्था देखी नहीं जा सकती। मैं चाहता हूँ संसार में सच्ची भक्ति का प्रचार हो। लोग ईश्वर के सच्चे भक्त बनें। इसी चिन्ता में मैं चारों दिशाओं में घूम आया हूँ, परन्तु किसी ने भी तो मेरे हृदय को शान्ति नहीं दी। कोई भी मेरा सहायक सिद्ध नहीं हुआ। कहो ऋषियो! क्या आप भी मुझे निराश रक्खेंगे अथवा मुझे बताएँगे कि वे कौन–से सत्कर्म हैं, जिनसे भक्ति बढ़ सकती है।

ऋषियों ने नारदमुनि के इस प्रभावशाली प्रवचन को सुना। सनत्कुमार ने आगे बढ़कर नारदमुनि को हृदय से लगा लिया। धन्य नारदमुनि, धन्य हो जिसे भक्ति का इतना ध्यान है। सुना! आज हम तुम्हें भगवान् को प्राप्त करानेवाली भक्ति का उपदेश करते हैं। जिससे न केवल भक्ति, ज्ञान और वैराग्य पूर्णरूप से प्राप्त होते हैं, प्रत्युत मुक्ति जैसा मीठा फल भी प्राप्त होता है।

हे नारद! जिसे द्रव्य आदि से किया जाए, वह 'द्रव्ययज्ञ' कहलाता है। जो ध्यान आदि द्वारा किया जाए, उसे 'ध्यानयज्ञ' कहते हैं और जिस अग्निष्टोम की विधि से करते (शास्त्रार्थ के द्वारा ज्ञान को बढ़ाते) हैं, उसे 'ज्ञानयज्ञ' कहते हैं। ये समस्त यज्ञ कर्म के अनुसार (जैसा–जैसा किसी ने यज्ञ किया, उसी के अनुसार) स्वर्गादि फल देनेवाले हैं। ऐसे श्रेष्ठ यज्ञों से केवल स्वर्ग ही मिलता है, मोक्ष नहीं।

फिर कौन ऐसा सत्कर्म है जो शेष रह गया है। सुनो नारद! मोक्ष–प्राप्ति की बुद्धि होकर, उसके द्वारा जो परमेश्वर की पूजा की जाती है, उसे ही विद्वान् लोग भक्ति कहते हैं, प्रश्न अभी मध्य में ही है कि वह मोक्ष–प्राप्ति की बुद्धि कहाँ से आये ?इसके लिए विद्वानों ने कहा है कि वेदाध्ययन के द्वारा स्वाध्याययज्ञ करते हुए ऐसी बुद्धि प्राप्त होती है।"

हे नारद! यही सत्य कर्म है। यही स्वाध्याययज्ञ करते– करते तुम्हें सत्य कर्मों का ज्ञान हो जाएगा। भक्ति की बुद्धि स्वाध्याय से पैदा होती है। ज्ञान स्वाध्याय से उत्पन्न होता है। भक्ति सच्चे हृदय से हो तो ज्ञान के नेत्र खुल जाते हैं। यदि ज्ञान के नेत्र शास्त्र के अनुकूल गये हैं तो वैराग्य का आनन्द प्राप्त होता है और यदि मन में पूर्ण रूप से वैराग्य उदय हो गया है तो मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यही उपदेश है। इसी का लोगों में प्रचार करो। लोगों को स्वाध्याय की ओर लगाओ, फिर वे स्वयमेव ईश्वर के भक्त बन जाएँगे।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह–सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य